Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University, Kanpur

Answer Script Details
Barcode 7257915

Roll No. 23262000054
Total Mark 67/75.00

Exam BACHELOR OF ARTS_DEC-2023
Subject A300101T - THEORETICAL AND ANALYTICAL STUDY

Question wise Mark Summary

Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark
1A	5/5						
1B	5/5						
1C	5/5						
1D	5/5						
1E	5/5						
1F	5/5						
1G	5/5						
1H	5/5						
1I	5/5						
2	0/15						
3	12/15						
4	0/15						
5	0/15						
6	0/15						
7	0/15						
8	0/15						
9	10/15						

Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University
Kanpur, Uttar Pradesh

Date of Exam: 22/12/23 Shift: 8 am to 10 Room No.: 19
Paper Code: A300101T Subject: Sitar Year/Sem: 1st Sem
Name of Candidate: Shivangi Dixit
Roll No.: 2326200054

Signature of Candidate: Shivangi Dixit
Signature of Invigilator
COE Facsimile

PART-II

MARKS OBTAINED										
Q	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
(a)										
(b)										
(c)										
(d)										
(e)										
(f)										
(g)										
(h)										
(i)										
(j)										
Total										

Total Marks in Figures: | Max. Marks:
Total Marks in Words:

A300101T
Paper Code

Signature of Evaluator

Course: B.A.
Session: 2023-24 Year/Semester: Ist Semester
Subject Name: Music Sitar
Medium: English ○ Hindi ●

Paper Code: A300101T
Exam Date: 22122023
Name of Candidate: SHIVANGI DIXIT
Father's Name: RAM KUMAR DIXIT

महाविद्यालय का कोड College Code: KN15
परीक्षा केन्द्र का कोड Exam Centre Code: KN15

परीक्षा का प्रकार Type of Exam
संस्थागत Regular ● | भूतपूर्व छात्र Ex-Student ○
व्यक्तिगत Private ○ | बैक पेपर परीक्षा Back Paper Exam ○

ANSWER BOOKLET NO.
7257915

A300101T
Paper Code

नामांकन संख्या Enrollement Number: CSJMA23000116362

परीक्षार्थी अनुक्रमांक संख्या Candidate's Roll Number: 2326200054

पेपर कोड Paper Code: A300101T

Signature of Candidate: Shivangi Dixit
Signature of Invigilator
C S Facsimile
COE Facsimile

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-I

1. Read the instructions carefully given on the answer script and admit card.
2. Write Date of Exam, Shift, Paper Code & Name of Subject Correctly.
3. Write Name & Roll No. Correctly.
4. Write Semester & Branch Correctly.

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-III

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in ☐ boxes.
2. Carefully study the example before you start marking.
3. As shown in the example below, blacken the circles completely.

Correct Method	Incorrect Method
① ● ③ ④	✓ ✗ ◉ ⓪

4. Make no Stray marks on this sheet.

5. DO NOT WRITE OR MARK ON THE BAR CODE.

IN ORDER TO AVOD UFM (UNFAIR MEANS) :

1. The Roll No. and Answer Book no. found elsewhere or any other symbol found in the answer book will be treated as unfair means.
2. Any tampering of Bar Code and Booklet no shall be treated as Unfair Means.
3. Do Not bring the materials like slip of paper/mobile/digital diaries/ study material/ revision notes in examination hall. Possession of the mobiles/ digital diaries/electronic/digital/ watch and any other electronic gadget except memory less scientific calculator shall be considered as UFM case.
4. Do not keep or paste currency note in answer script it shall be consider as UFM.

अनुचित साधन से बचने हेतु :

1. उत्तर पुस्तिका के निर्धारित स्थान को छोड़कर अनुक्रमांक एवं उत्तरपुस्तिका का क्रमांक कहीं और न लिखें तथा कोई भी चिन्ह न बनायें क्योंकि यह अनुचित साधन प्रयोग की श्रेणी में आता है।
2. उत्तर पुस्तिका के बारकोड अथवा उत्तर पुस्तिका संख्या पर छेड़ छाड़ करने पर अनुचित साधन प्रयोग माना जायेगा।
3. परीक्षा कक्ष में निम्न वस्तुएं साथ न लायें, जैसे लिखे हुए कागज के टुकड़े, मोबाईल, डिजिटल डायरी, डिजिटल वॉच, कॉपी, पुस्तक या सभी वस्तुएं जो अनुचित साधन के अन्तर्गत आती है। केवल संबंधित प्रश्नपत्र में ही मेमोरी लेस साइंटिफिक कैल्कुलेटर ले जाने की अनुमन्यता होगी।
4. उत्तर पुस्तिकाओं में रुपये न रखें न ही उत्तर पुस्तिका में चिपकायें। ऐसा करना अनुचित साधन प्रयोग की श्रेणी में आता है।

परीक्षार्थियों को दिशा निर्देश

1. प्रवेश पत्र एवं उत्तर पुस्तिका पर दिये गये निर्देशों को ध्यान से पढ़ें।
2. ऊपर पृष्ठ के दूसरी तरफ कुछ न लिखें।
3. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों पर दोनों तरफ लिखें।
4. प्रश्न पत्र पर अपने अनुक्रमांक के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
5. प्रश्न पत्र कोड एवं प्रश्न पत्र ID सावधानी पूर्वक लिखें।
6. अपनी स्थिति स्पष्ट लिखें।
7. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों की संख्या देखें। अगर उत्तर पुस्तिका में पृष्ठ (1-24) से कम है या फटे हुए है, तो परी शुरू होने के पूर्व दूसरी उत्तर पुस्तिका ले लें।
8. प्रश्नपत्र को देख, यदि प्रश्नपत्र के विषय कोड, विषय का नाम तथा प्रश्न में कोई त्रुटि है तो उसके परी होने के 30 मिनट के अन्दर कक्ष निरीक्षक को तत्काल सूचित करें, उसके बाद विश्वविद्यालय द्वारा कोई नहीं की जायेगी।
9. प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिये पेंसिल का प्रयोग न करें।
10. बी कॉपी या अतिरिक्त शाक नहीं दिया जायेगा।

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE

1. Read the instructions carefully given on the Question Paper, Admit Card & Answer Script.
2. Do not write anything on back side of the cover page.
3. Write on both sides of pages of answer book.
4. Do not write anything on question paper except Roll Number.
5. Write Paper Code & Question Paper Id carefully.
6. CHECK the number of pages (1-24) or any other kind of damage in your answer script, if found than change the answer script immediately before the commencement of examination.
7. CHECK the Question Paper for any kind of discrepancy e.g. Subject Code, S Name, and Question of the Question Paper during first THIRTY MINUTES of commencement of the exam, so that it can be corrected in TIME. After that no corrections shall be entertained by the university.
8. Do not use pencil for answering the question.
9. Write status correctly e.g. those appearing in carry over papers should fill in sta as Carry Over. Those appearing as Ex- Students should fill in status as ex.
10. No supplementary answer book & graph paper will be provided.

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-IV

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in ☐ Boxes.
2. Use blue or black ball point pen for filling the circles.

	1	8	1	5	4	3	2	1	6	9
0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
1	●	1	●	1	1	1	1	●	1	1
2	2	2	2	2	2	2	●	2	2	2
3	3	3	3	3	3	●	3	3	3	3
4	4	4	4	4	●	4	4	4	4	4
5	5	5	5	●	5	5	5	5	5	5
6	6	6	6	6	6	6	6	6	●	6
7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7
8	8	●	8	8	8	8	8	8	8	8
9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	●

Note- If your Roll No. is of 10 digits. Please leave first three columns .

Paper Code A300 1017

1

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. (a) राग - यमन

वादी स्वर - ग (गंधार)
सम्वादी स्वर - नी (निषाद)

राग यमन कल्याण थाट पर आधारित है, वादी स्वर ग तथा सम्वादी स्वर नी है।

(b) स्वर - संगीत में प्रयोग होने वाली 22 श्रुतियों में से चुनी गयी वे 12 श्रुतियां जिन्हें गाना, बजाना एवं पहचानना सम्भव है, 'स्वर' कहलाते हैं।

स्वर

शुद्ध स्वर
संख्या - 7
सा, रे, ग, म, प, ध, नी

विकृत स्वर
संख्या - 5
रे ग ध नी म॑

कोमल विकृत
संख्या - ४
रे ग ध नी

तीव्र विकृत
संख्या - 1
म॑

Do Not Write anything in this Portion

इसके अतिरिक्त स्वर को और दो भागों में विभाजित किया गया है –

* चल स्वर – रे रे ग ग म मं ध ध नी नी
* अचल स्वर – सा और प

(c) राग – भूपाली

थाट – कल्याण
गायन / का समय – रात्रि का प्रथम प्रहर
वादन

राग भूपाली कल्याण थाट पर आधारित है अतः परन्तु इसमें म और नी स्वर वर्जित है।

(d) आरोह – अवरोह → आरोह - अवरोह को हम इस प्रकार परिभाषित करेंगें. स्वरों के नीचे से ऊपर जाने के क्रम को अनुलोम अथवा आरोह कहते हैं। जैसे – सा, रे, ग, म, प, ध, सां।

तथा स्वरों के ऊपर से नीचे जाने के क्रम को विलोम अथवा अवरोह कहते हैं, परन्तु कभी-कभी किसी राग में स्वरों का चलन सपाट न होकर वक्र होता है अतः हम स्वर को इस प्रकार परिभाषित करेंगें। "राग के चलन के अनुसार मध्य सा से तार सां तक स्वरों के चढ़ते हुए क्रम को 'आरोह' तथा इसके विपरीत तार सां से मध्य सा तक स्वरों के उतरते हुए क्रम को 'अवरोह' कहते हैं।"

Paper Code A 3 0 0 1 0 1 7

(c) सप्तक — सा से नी तक के क्रमिक समूह को सप्तक कहते हैं इसके अतिरिक्त सात स्वरों के क्रमिक समूह सप्तक कहते हैं। एक सप्तक के अन्तर्गत 7 शुद्ध 5 विकृत कुल 12 स्वर होते हैं। सप्तक तीन प्रकार के होते हैं:-

(i) मन्द्र सप्तक (सा̣) स्वर के नीचे बिन्दु
(ii) मध्य सप्तक (सा) कोई चिन्ह नहीं
(iii) तार सप्तक (सां) स्वर के ऊपर बि[न्दु]

(i) मन्द्र सप्तक — मध्य सप्तक से पहले आने वाले सप्तक को मन्द्र सप्तक कहते हैं। इस सप्तक की आन्दोलन संख्या मध्य सप्तक के स्वरों की आन्दोलन संख्या से आधी होती है। मन्द्र सप्तक के स्वरों की पहचान स्वर के नीचे बिन्दु लगाकर करते हैं। जैसे — सा̣

(ii) मध्य सप्तक — मन्द्र सप्तक और तार सप्तक के मध्य के सप्तक को मध्य सप्तक कहते हैं। मध्य सप्तक के स्वरों का कोई पहचान चिन्ह नहीं होती है। जैसे — सा

(iii) तार सप्तक — मध्य सप्तक के बाद के सप्तक को तार सप्तक कहते हैं। तार सप्तक के स्वरों की आन्दोलन संख्या मध्य सप्तक के स्वरों की आन्दोलन संख्या से दोगुनी ऊँची होती है। तार सप्तक के स्वरों की पहचान स्वर के ऊपर बिन्दु लगाकर करते हैं। जैसे — सां

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code: A30010 1T

(f) तीन्ताल

मात्रा — 16
विभाग — 4
ताली — 1, 5, 13 पर
खाली — 9 पर

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा	धा	तिं	तिं	ता
X				2				0			

13	14	15	16
ता	धिं	धिं	धा
3			

(g) दादरा ताल

मात्रा — 6
विभाग — 2
ताली — 1 पर
खाली — 4 पर

1	2	3	4	5	6
धा	धी	ना	धा	तू	ना
X			0		

(h) आश्रय राग — कोई भी राग जिस बात पर आधारित होती है अर्थात जिस बात से उस राग की उत्पत्ति होती है उसे 'आश्रय राग' कहते हैं। प्रत्येक राग किसी न किसी बात पर आधारित होती है। जैसे — राग यमन कल्याण थाट पर आधारित है अतः राग यमन का आश्रय राग कल्याण थाट है। इसी प्रकार भूपाली का भी थाट कल्याण है तो भूपाली भी कल्याण थाट आश्रित राग है।

(i) सितार के बोल — सितार के 2 बोल होते हैं —

- दा
- रा

सितार बजाते समय अर्थात सितार / गिटार पर रज़ाखानी या मसीतखानी गत बजाने पर दो बोल प्रयुक्त होते हैं। स्वर के नीचे यही दोनों बोल प्रयोग किये जाते हैं।

मसीतखानी गत का मसीत खां के नाम पर पड़ा तथा रज़ाखानी गत का नाम रज़ा खाँ के नाम पर पड़ा।

मसीतखानी गत को द्रुत लय में बजाया जाता है, इसमें स्थाई और अन्तरा दो भाग होते हैं।

रज़ाखानी गत को विलंबित लय में बजाया जाता है। इसमें भी स्थाई और अन्तरा दो भाग होते हैं।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code A300101T

(खण्ड – ब)
दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्र०–3 राग भूपाली

दोहा – आरोही – अवरोही में,
सुर म नि कीन्हें त्याग ।।
ध ग संवादी – वादी ते,
कहत भूपाली राग ।।

थाट – कल्याण
जाति – औडव – औडव
वादी – ग (गंधार)
सम्वादी – ध (धैवत)
गायन का समय – रात्रि का प्रथम प्रहर
विकृत स्वर – कोई नहीं
वर्जित स्वर – म और नी
समप्रकृति राग – राग देशकार

आरोह – सा रे ग प ध सां ।
अवरोह – सां ध प ग रे सा ।
पकड़ – ध ध प ग रे सांधप ग रे सा ।

Paper Code A3001101T

विशेषताएँ – (i) राग भूपाली कल्याण थाट जनक राग है।
(ii) इसकी जाति औडव - औडव है क्योंकि आरोह तथा अवरोह मे 5-5 स्वर है।
(iii) इसमें वादी स्वर ग जिसे गंधार भी कहते हैं।
(iv) इसमे सम्वादी स्वर ध जिसे धैवत भी कहते है।
(v) राग भूपाली का गायन समय रात्रि का प्रथम प्रहर है।
(vi) यह गंभीर प्रकृति की राग है।
(vii) इसमें हीरा रत्पाल, कुमरी आदि गाये जाते हैं।
(viii) राग भूपाली का चलन मन्द्र तथा मध्य सप्तक मे अधिक है।
(ix) राग भूपाली में बहुत से लोकप्रिय गीत भी हैं।

खण्ड – स

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्र०-1 जीवन परिचय

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code A30010 1T

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

खण्ड - स

प्र०-५ जीवन परिचय

पं विष्णु नारायण भातखंडे

जन्म — 10 अगस्त 1860

जन्म स्थान — मुम्बई वालकेश्वर ग्राम में

बी० ए० — सन् 1883 में

एल० एल० बी० — सन् 1890 में

ऐतिहासिक संगीत यात्रा — 1904 में
प्रारम्भ की

विशाल संगीत सम्मेलन — सन् 1916 बड़ौदा में
का आयोजन

पुस्तकें लिखीं — अभिनव राग मंजरी, लक्ष्य संगीत, स्वरमालिका आदि।

भातखंडे जी के शिष्य — सीताराम पन्त मोदी, राजा भैय्या पूंछवाले, के० जी० शिन्दे आदि।

मृत्यु — 19 सितम्बर 1936 गणेश चतुर्थी के दिन।

डाक टिकट जारी किया — सन् 1961 में।
गया

संगीत के महान व्यक्तित्व एवं प्रतिभाशाली पं० विष्णु नारायण भातखंडे जी का जन्म 10 अगस्त 1860 को मुम्बई के वालकेश्वर [illegible] ग्राम में हुआ।

भातखंडे जी की गायन में रुचि तथा थी। इसके साथ ही सितार तथा बाँसुरी की शिक्षा प्राप्त की। इन्होंने कई गुरुओं से गायन की शिक्षा प्राप्त की तथा सितार व वल्लभदास जी से सीखा। बचपन से ही गायन में इनकी रुचि थी।

पंडित विष्णु नारायण भातखंडे जी ने 1883 में बी० ए० तथा 1890 में एल० एल० बी० कर उन्होंने वकालत की परन्तु वकालत में इनका मन न लगने के कारण उन्होंने वकालत छोड़ पुनः संगीत प्रारम्भ किया।

सन् 1904 में उन्होंने ऐतिहासिक संगीत यात्रा प्रारम्भ की। उस समय किसी को शास्त्रों का ज्ञान नहीं था अतः पंडित विष्णु नारायण भातखंडे जी ने कई ग्रन्थों तथा पुराणों का अध्ययन कर संगीत की एक विशेष पहचान दी उन्होंने यह पाया की संगीत में बहुत सी विषमताएँ है तथा उस समय कोई भी स्वरलिपि प्रचलन में नही थी।

अतः पंडित विष्णु नारायण भातखंडे जी ने एक स्वरलिपि की रचना की जिसे भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के नाम से जाना गया। उस समय राग-रागिनी पद्धति प्रचलन में थी, पंडित जी ने गहन अध्ययन कर रागों को 10 थाटों में विभाजित किया तथा प्रत्येक राग को किसी न किसी थाट पर आधारित कर राग-रागिनी पद्धति की जगह थाट आश्रय रागों को दी।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code A 3 0 0 1 0 1 T

सन् 1916 बड़ौदा में पंडित विष्णु नारायण भातखंडे जी ने विशाल संगीत सम्मेलन का आयोजन किया जिसका उद्घाटन राजा नरेश ने किया। पंडित विष्णु नारायण भातखंडे जी समझ गये की संगीत का प्रचार - प्रसार अत्यधिक आवश्यक है क्योंकि उस समय मोबाइल फोन, रेडियो, इन्टरनेट आदि का अभाव था। अतः उन्होंने जगह - जगह जाकर संगीत सम्मेलनों का आयोजन किया जिसमें उन्हें सफलता भी मिली उन्होंने बड़ौदा, पंजाब, ~~महाश~~ सूरत आदि जगहों पर संगीत सम्मेलन किये। जिसमें उन्हें अत्यधिक सफलता मिली।

पंडित विष्णु नारायण भातखंडे जी ने कई गुरुओं से गंडा बंधवाया और बंदिशें सीखी उस समय गुरुओं से शिक्षा प्राप्त करना बहुत कठिन था तथा गुरुओं की बहुत सेवा करनी पड़ती थी अतः पंडित विष्णु नारायण भातखंडे जी ने कई राग पद्धतियों बहुत से शिष्यों को शिक्षा दी उनके शिष्यों में सीताराम पन्त मोदी, राजा भैय्या पूछवाले, के. जी. शिन्डे आदि थे।

पंडित विष्णु नारायण भातखंडे जी ने आधुनिक संगीत पद्धति को पुस्तकों में लिखा। उनकी लिखी कुछ पुस्तकें अभिनव राग मंजरी, लक्ष्य संगीत, स्वरमालिका आदि है। उन्होंने अपनी पुस्तकों में रागों को नया रूप प्रदान किया।

पंडित विष्णु नारायण भातखंडे जी को अत्यधिक संगीत सम्मेलनों में सफलता मिली तथा विशेष म्यूजिकल अकादमी की स्थापना की, इन्होंने संगीत की नई पद्धति प्रदान की।

संगीत के इस महान गायक का निधन 19 सितम्बर 1936 को गणेश चतुर्थी के दिन हुआ। पंडित विष्णु नारायण भातखंडे जी ने अपनी पुस्तकों में भातखंडे स्वरलिपि तथा अन्य संगीत की विधाओं का वर्णन किया यदि वे ऐसा न करते तो संगीत जगत इस उपहार से वंचित रह जाता। संगीत के इस महान गायक को सन 1961 में डाक टिकट जारी कर भावपूर्ण श्रद्धांजलि दी। पं विष्णु नारायण भातखंडे जी का सम्पूर्ण जगत सदैव आभारी एवं ऋणी रहेगा।

Paper Code

12

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

13

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

Paper Code

Paper Code

16

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

17

X

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

18

Paper Code

19

Paper Code

20

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

21

Paper Code

22

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

23

Paper Code

24

Do Not Write anything in this Portion